हे बचपन! तू लौट पुनः आ।।

पवन कुमार पाण्डेय
एम.ए. (साहित्य) &
एम. ए. (लोक प्रशासन)
अनुभाग अधिकारी
श्री वेंकटेश्वर महाविद्यालय
(दिल्ली विश्वविद्यालय)

बालसखा जो बिछुड़ गए हैं
साथ-साथ खेले खाए हैं,
बुला उन्हें अब पास मेरे ला
हे बचपन! तू लौट पुनः आ...

चाय सुबह-शाम बनती थी
पापा को बिस्तर पर मिलती,
बनने को पापा मन करता
हे बचपन! तू लौट पुनः आ...

फिर, लेकिन अब तो हूं पापा
वो सुख मुझे नहीं मिल पाता,
जो बचपन में पाता
हे बचपन! तू लौट पुनः आ...

वह दिन मुझे याद अब आता
समवय सह पढ़ने जब जाता,
लगता है वह समय स्वर्ण सा
हे बचपन! तू लौट पुनः आ...

शाम लौट जब घर आता था
आते ही खाना पाता था,
समय बड़ा वो मनमोहक था
हे बचपन! तू लौट पुनः आ...

"अम्मा" सुबह-सुबह उठ जातीं
हम सबको वह खूब पढ़ातीं,
हाथ कभी उनका न उठता
हे बचपन! तू लौट पुनः आ...

पड़ीं झुर्रियां चेहरे पर थीं
बाल दूध आंखें अंदर थीं,
ऐसी थीं मेरी दादी मां
हे बचपन! तू लौट पुनः आ...

साथ-साथ हे चलने वाले
पथ-बाधा से लड़ने वाले,
उस दिन को वापस अब ला
हे बचपन! तू लौट पुनः आ...

गया समय कैसे आएगा
इसको रोक कौन पाएगा,
दौड़ दोस्त! तू पकड़ समय ला
हे बचपन! तू लौट पुनः आ...

समय-चक्र है ऊपर-नीचे
रखिए 'पवन' नयन-पट नीचे,
प्रियवर! सोच विचार जरा सा
हे बचपन! तू लौट पुनः आ...